श्री पितर चालीसा

॥ दोहा ॥

हे पितरेश्वर आपको
दे दियो आशीर्वाद ।
चरणाशीश नवा दियो,
रखदो सिर पर हाथ॥

सबसे पहले गणपत,
पाछे घर का देव मनावा जी।

हे पितरेश्वर दया राखियो,
करियो मन की चाया जी ॥

॥ चौपाई ॥

पितरेश्वर करो मार्ग उजागर।
चरण रज की मुक्ति सागर ॥

परम उपकार पित्तरेश्वर कीन्हा ।
मनुष्य योणि में जन्म दीन्हा ॥

मातृ-पितृ देव मनजो भावे।
सोई अमित जीवन फल पावे॥

जै जै जै पित्तर जी साईं ।
पितृ ऋण बिन मुक्ति नाहिं ॥

चारों ओर प्रताप तुम्हारा।
संकट में तेरा हीसहारा ॥

नारायण आधार सृष्टि का ।
पित्तरजी अंश उसी दृष्टि का॥

प्रथम पूजन प्रभु आज्ञा सुनाते ।
भाग्य द्वार आप ही खुलवाते॥

झुंझुनू में दरबार है साजे।
सब देवों संग आपविराजे ॥

प्रसन्न होय मनवांछित फल दीन्हा ।
कुपित होय बुद्धि हर लीन्हा ॥

पित्तर महिमा सबसे न्यारी ।
जिसका गुणगावे नर नारी ॥

तीन मण्ड में आप बिराजे।
बसु रुद्र आदित्य में साजे॥

नाथ सकल संपदा तुम्हारी।
मैं सेवक समेत सुत नारी ॥

छप्पन भोग नहीं हैं भाते ।
शुद्ध जल से ही तृप्त हो जाते ॥

तुम्हारे भजन परम हितकारी।

छोटे बड़े सभी अधिकारी ॥

भानु उदय संग आप पुजावै।
पांच अँजुलि जल रिझावे ॥

ध्वज पताका मण्ड पे है साजे ।
अखण्ड ज्योति में आप विराजे ॥

सदियों पुरानी ज्योति तुम्हारी।
धन्य हुई जन्म भूमि हमारी ॥

शहीद हमारे यहाँ पुजाते।
मातृ भक्ति संदेश सुनाते॥

जगत पित्तरो सिद्धान्त हमारा ।
धर्म जाति का नहींहै नारा॥

हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई।
सब पूजे पित्तर भाई॥

हिन्दु वंश वृक्ष है हमारा।
जान से ज्यादा हमको प्यारा ॥

गंगा ये मरुप्रदेश की ।
पितृ तर्पण अनिवार्य परिवेशकी॥

बन्धु छोड़ना इनके चरणाँ।
इन्हीं की कृपा से मिले प्रभु शरणा॥

चौदस को जागरण करवाते।
अमावस को हम धोक लगाते ॥

जात जड़ूला सभी मनाते।
नान्दीमुख श्राद्ध सभी करवाते ॥

धन्य जन्म भूमि का वो फूल है।
जिसे पितृ मण्डल की मिली धूल है।

श्री पित्तर जी भक्त हितकारी ।
सुन लीजे प्रभु अरज हमारी॥

निशदिन ध्यान धरे जो कोई।
ता सम भक्त और नहीं कोई॥

तुम अनाथ के नाथ सहाई ।
दीनन के हो तुम सदा सहाई॥

चारिक वेद प्रभु के साखी।
तुम भक्तन की लज्जाराखी॥

नाम तुम्हारो लेत जो कोई।
ता सम धन्य और नहीं कोई ॥

जो तुम्हारे नित पाँव पलोटत।
नवों सिद्धि चरणा में लोटत॥

सिद्धि तुम्हारी सब मंगलकारी।
जो तुम पे जावे बलिहारी ॥

जो तुम्हारे चरणा चित्त लावे ।
ताकी मुक्ति अवसी हो जावे ॥

सत्य भजन तुम्हारो जो गावे ।
सो निश्चय चारों फल पावे॥

तुमहिं देव कुलदेव हमारे ।
तुम्हीं गुरुदेव प्राण से प्यारे ॥

सत्य आस मन में जो होई ।
मनवांछित फल पावें सोई॥

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई ।
शेष सहस्र मुख सके न गाई ॥

मैं अतिदीन मलीन दुखारी ।
करहु कौन विधि विनय तुम्हारी ॥

अब पित्तर जी दया दीन पर कीजै ।
अपनी भक्ति शक्ति कछु दीज॥

॥ दोहा ॥

पित्तरौं को स्थान दो, तीरथ और स्वयं ग्राम।
श्रद्धा सुमन चढ़ें वहां,पूरण हो सब काम ॥

झुंझुनू धाम विराजे हैं, पित्तर हमारे महान ।
दर्शन से जीवन सफल हो, पूजे सकल जहान ॥

जीवन सफल जो चाहिए, चले झुंझुनू धाम ।
पित्तर चरण की धूल ले, हो जीवन सफल महान ॥